

जाय । हमारी समझ में किसी की यह मानने में आपत्ति नहीं है  
 सकती कि बड़ी मौन्दर्य्य अकृष्टनम है जो अधिक में यदि  
 काल तक हमारी अधिक में अधिक परिश्रम कर सके । मनु-  
 का शारीरिक मौन्दर्य्य जितने समय के लिए है ? उसका सम्-  
 लावण्य एक क्षण में नष्ट हो सकता है । इसी प्रकार कुल, ल-  
 आदि के मौन्दर्य्य का हाल समझिए । बालक के हँसने में :  
 माधुर्य्य है, कन्या की आँखों में सरलता की जो छटा है वह कि-  
 सी समय काल-कथलित हो सकती है । परन्तु पशुमा को दु-  
 रादृष्ट का यह हाल नहीं है, केवल पशु-कदा बादलों में आका-  
 होने के क्षणमयी की छाँड़कर साधारणतया वह जब क-  
 आकाश में प्रकट होगा तभी अपने मन्द हृदय में मौन्दर्य्य-रसि-  
 की उत्पत्ति कर देगा । अनन्त काल से वह ऐसा करता आया  
 और अनन्त काल तक उसमें ऐसा करने रहने की आशा ।  
 उषा, सन्ध्या, रात, पर्वत, समुद्र, रजनी आदि का मौन्द-  
 मण्डार अनन्त काल तक रिक्त नहीं हो सकेगा ।

परन्तु यदि हम मनुष्य के शारीरिक मौन्दर्य्य में ध्यान न  
 कर उसके उस मौन्दर्य्य पर दृष्टिपात करें जिसका सम्-  
 उसके मन की विविध समतापूर्ण अवस्थाओं में है :  
 क्या कोई अन्तर नहीं उपस्थित होगा ? इसमें कोई सन्देह न  
 कि मनुष्य के मानसिक मौन्दर्य्य का जल्पना-द्वारा रसावा-  
 अधिक काल तक किया जा सकता है; उनकी मनोवैज्ञानि-

वस्थाएँ उपा की तरह रंगीन, संध्या की तरह सुन्दर, वादल की तरह मरम और समुद्र की तरह विविध आनन्द-रत्नों की गन हैं ।

किन्तु क्या ऐसा भी कोई मौन्दर्य है जो उपा, मध्या, वादल, र्वत, समुद्र, रजनी तथा मनुष्य के मानसिक मौन्दर्य की गति र भी परे है, जिसका कभी क्षय नहीं होता, जिसमें क्षण भर िलए भी परिवर्तन का भय नहीं है । हाँ, यह वह मौन्दर्य िसने अपने हृदय के रक्त से उपा की सृष्टि की है, अपने वेपाद से अन्धकार में और मन्द ताम से ज्यात्ना तथा दामिनी ि प्राण-मञ्जार किया है । जिसने प्रभात काल के दूर्वादल को अपने गले का मौक्तिक हार प्रदान किया है जिसने उपहार-रूप ि समुद्र को अपना बिन्दार और पर्वत को अपना गौरव दिया है । इसी मौन्दर्य के दर्शन में जीवन की अपूर्णता नष्ट होती है और मानव-व्यक्तित्व इसी के चरणों पर अपने आप को निझाकर फरके फूटफूट्य हो जाता है; मौन्दर्य-रमिकता की मारी प्यास यही बुझ जाती है । इस मौन्दर्य का दर्शन करनेवाले की प्रतीक्षा और अकण्ठा का शमन एक क्षण ही हो जाता है । इस मौन्दर्य में नल्लान हो जाने के बाद फिर मो जीवन का परम तपस्या की मिट्टि हो जाता है ।

नर शिव मूरतम न स पारम मानव-मौन्दर्य म नृ प्र-लाभ नही । क्या था व रमा नही मौन्दर्य क रामक था । रामक आर



अवस्थाएँ उषा की तरह रंगीन, मध्या की तरह सुन्दर, वादल की तरह मरस और समुद्र की तरह विविध आनन्द-रत्नों की ग्यान हैं।

किन्तु क्या ऐसा भी कोई सौन्दर्य है जो उषा, मध्या, वादल, पर्वत, समुद्र, रजनी तथा मनुष्य के मानसिक सौन्दर्य की गति में भी परे है, जिसका कभी क्षय नहीं होता, जिसने क्षण भर के लिए भी परिवर्तन का भय नहीं है। हाँ, यह वह सौन्दर्य है जिसने अपने हृदय के रक्त में उषा की मृष्टि की है, अपने विषाद में अन्धकार में और मन्द हाम में उदात्ता तथा दामिनी में प्राण-मञ्जार किया है। जिसने प्रभात धात के दूर्वादल को अपने गले का मौक्तिक हार प्रदान किया है जिसने उपहार-रूप में समुद्र को अपना विस्तार और पर्वत को अपना गौरव दिया है। इसी सौन्दर्य के दर्शन में जीवन की अपूर्वता नष्ट होती है और मानव-व्यक्तित्व इसा के चरणों पर अपने आप को निहावर करके कृतकृत्य हो जाता है; सौन्दर्य-गमिकता का मार्ग याम यही धुन जाता है। इस सौन्दर्य का दर्शन मनव-व्यक्ति का प्रनाल और अ-कण्टा का शसन एक धार हो जाता है। इस सौन्दर्य में रहने से ही जिनके उषाद पर तो मानव-व्यक्ति के सौन्दर्य का जन्म होता है।

इस सौन्दर्य के दर्शन से ही मानव-व्यक्ति के सौन्दर्य का जन्म होता है। इस सौन्दर्य के दर्शन से ही मानव-व्यक्ति के सौन्दर्य का जन्म होता है।

ऊपर संकेत किया गया है। इस महा सौन्दर्य का दर्शन हमें श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में किया था। श्रीकृष्ण की चरितार्ति इन विविध सौन्दर्य-राशि में सम्पन्न है जिसके एक अंश को, एक भाग को लेकर बड़े में बड़ा रसिक भी आनन्द में धम्य हो सकता है। वे नन्द-यशोदा के पुत्र, गावियों के प्राण बल्लभ, कम-जरासभ आदि राक्षसों के संहारक, और महाभारत के रण-क्षेत्र में ज्ञान के व्यासवाना के रूप में हमारे सामने आते हैं। पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का चरित्र उस अनुदिग्गामो पद्मान में परिपूर्ण है जो विभिन्न युगों के अज्ञानान्धकार का विभिन्न किरणों के द्वारा दूर कर सकता है। महाकवि मूरदास ने भिम युग में अन्ध महाकवि किया था हमने । श्रीकृष्ण के गोपी अङ्गन रूप ही का उल्लास के युग-भ्रमों की, युग-समस्या की परिमृष्टि हो रही थी। विभिन्न युगों का विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं, विभिन्न समस्याएँ होती हैं। मूरदास का समय आत्मा का समय नहीं है। आत्मा की समस्याएँ श्रीकृष्ण का गाथा बल्लभ रूप में बल्लभ में बल्लभ नहीं हो सकती।

किन्तु जो यह ना मानता हो वहगा एक हाथ केवल युग-समय के निरूपण और मान में मस्तुक्त नहीं हो जाता वह मार्क-मौल और मार्क-मौल मान का मान निरुत्ती ही अधिक मात्रा में करता है इनकी वृत्ति वह वृत्ति अङ्गुष्ठना समझना आदि। मूरदास का अन्ध-मन में वृत्ति पूर्णता व अन्धता की तरह



काश्य-विषय प्रदान कर सकतो हे ।

मूत्रास ने श्रीकृष्ण की बाललीला में लेकर उनके द्वात्रिंश-  
निवास नक की कथा पदों में कही है। उन्होंने उन्हें समुद्र तट  
के मानव जरीरधारी अवतार ही के रूप में अंकित किया है,  
उनकी दृष्टि में मोहगुण ईश्वर हैं, उनमें दुर्बलता का लेश सम्भव  
नहीं; वे सर्व-ममर्थ हैं और उनकी अलौकिक लीलाएँ मानवा  
बुद्धि के लिए अगम्य हैं। उनके सयोग-शृङ्गार-वर्णन में भी  
प्रसन्न और प्रकृति का विलास-चिन्तन ही उन्हें वैश्व आवेश में  
डाल देता है। मूत्रास की सी दृष्टि रखने वाले का शायद उन  
शृंगारिक पदों में भी कोई दोष न दिखायी पड़े। किन्तु फिर भी  
यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सर्व-साधारण के लिए उपयुक्त  
नहीं हैं।

मूरधाम के व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में ठीक ठीक बात बहुत कम ज्ञात है। श्रीगामी वैष्णवा की शान्ति में गोकुलन धन और भक्तमाल में नाभाद म न उनका चर्चा ही है । १५३२-३३ का दृष्टि के निकटवर्ती मोरी घाम निवास मासमान ४८ गम नाम का पुत्र वत्सल ना ह । उनकी जन्म कथ कहते हैं कि १५३२ म काट निजियन बाव कहना कठिन है । उनके ४६० के मन

२६६५ क लगभग १८५० ई. महात्मा जन्म-वर्ष क

ये जिनके १५ =





संगठित करने में, तथा लोकोंसियों के जमीने जड़ने में मूरदास हिन्दी-साहित्य में तुलसीदास को छोड़कर शेष समस्त कवियों में ऊँचा स्थान रखते हैं।

इस संग्रह का हिन्दी साहित्य के विगार्थियों के योग्य बनाने में मैंने कई बातों का ध्यान दृष्टि-मान रक्खा है। पद्यों का तो यह है कि मैंने इसमें ऐसे पद नहीं आने दिये हैं जिनमें मुकुमार मस्तिष्क वाले छात्रों पर अधिक प्रभाव पड़ने का आशङ्क हो। मैं सम्पूर्ण संग्रह का सात भागों में विभक्त किया है; (१) यान्तलोला; (२) नन्द-वशादा आदि की घोड़ा; (३) निरहिर्णा-गोपिका (४) उद्धव-सदेश (५) मुदामा-वैश्व-नियारण; (६) प्रभा-मिलन (७) भक्त-का आदेश। ये सभी विभाग ऐसे हैं जिनमें नव युवकों और नव युवतियों के चरित्र को उच्च बनाने में सहायक तथा कामल सामिक और रमणीय भावों में अलङ्कृत लोभात्तर आनन्द-प्रदायक पदों का संग्रह किया गया है। इस आयोजन में आशा है, पाठक लाभान्वित होंगे।

दारागञ्ज, पयाग

{

गणेशदास शुक्ल





बाल-लीला



भाई आजु ने पधार्त बाजै नन्द नन्द बं ।  
 फूले पिरै गोपी बाल टार-टार बं ॥ १ ॥  
 फूली धेतु फूले धाम फूली गोपी अग रग ,  
 फूले फूले लखर जानैद लार बं ॥ २ ॥  
 फूले दही-जन द्वारे फूला फूले दन्दनवारै  
 फूले लगी जाइ साइ गोकुल सहर बं ॥ ३ ॥  
 फूले पिरै जहाँ कुन कनेइ समूल मूल  
 छबुनि पुन्य फूले धामे धार बं ॥ ४ ॥  
 गङ्गे जमुना जल धारिनि बर बर  
 नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी  
 नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी  
 नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी  
 नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी  
 नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी  
 नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी

२ ✓

कर गहि पग थ्येगुटा मुख मेलन ।

प्रभु पौड़े पालने अकेले, हरपि हरपि अपने रंग लेलन ॥  
 सिव सांघन बिधि बुझि विचारन, बट बाह्या सागर जल मेलन ।  
 बिहरि चन चन प्रलय जानिकै, दिगपति दिगदत्त न मेलन ॥  
 मुनि मन भोग भये भव कपिन संप सकुचि महसौ फन पेचन  
 वन प्रजपासिन बात न जानी, समुके मूर सकट पगु पेलन ।

२

—

३ ✓

लासन हौं, बारी मेरे मुख पर ।

माई मारिहा डीठि न लागै माने मसि बिम्बा द्यो भू पर ।  
 मयैसु छै पहिले ही दीनो नागही नागही दंतुली दू पर  
 अब कहा करी निझावहि मूर जमावनि अपने लासन ऊपर ।

—

४

साभा नो व रा नर मुख पर ॥

दुखिल अलक साहन मन आवै मन, सुकट विकट पकज नैननि पर ॥  
 देहे दमाक नैननि आवै मन मनु सावचन किय बागज पर ।

## बाल-लीला

लघु लघु मिर लट घूँघरवारी, रहा लटकि लौनी लिलार पर  
 यह अपना कहि कापै आवै, कहुक सकुचत हौ हिय पर  
 नूतन चन्द्ररेख मधि राजनि मुर गुरु मुक्त उद्योत परस्पर  
 लोचन लोचन कपोल ललित अति, नासिक को मुकारद छद पर  
 मूर कदा न्योछावरि करिये, अपने लाल ललित तर ऊपर

५

५

जसोदा मदन गुमान सुधावै ५

देखि मदन-गति विनुवन काँप्यो ईन धिरंघि भमावै  
 अमिल करन मित आनन लोचन, उभै पनक पर आवै  
 उनु गविगति मकुचित कमल जुग ललित अनि उड़न न पावै  
 चौकि चौकि मिस्र उन्न प्रगट कर लाय मन मे नहि आवै  
 माने लोभनन कर कर आननन ललित भहार भरावै  
 नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन





कदहुँ पलक हरि मूँदि लेत है अघर कदहुँ फरकावै ।  
 सोवत जानि मौन है पैठो करि कर-सैन बतावै ॥  
 इहि अन्तर अकुलाइ ओ हरि अनुमति मधुरै गावै ।  
 जो मुख नूर अमर मुनि दुर्लभ नां नैद भासिनि पावै ॥

जमुनन मन अभिलाष करै ।

कब मेरो लात घुदुरुअन रँग कब घरनी पग टूँक धरै ॥  
 कब टै दन दूध के देसों कब तुनरै मुख दैन भरै ॥  
 कब नन्दहि कहि बाधा बोलै कब जननी कहि मोहि ररै ।  
 कब मेरो अँधरा गहि मोहन जोइ सोइ कहि मोमो भगरै ॥  
 कब घों तनक तनक कहु नैहै अपने करसो मुखहि भरै ।  
 कब हँसि यान कहेंगे मोमो छवि पैवन दुख दूरि करै ।  
 म्याम अकले आँगन छाँड़ि आपु गड कहु काज घरै ॥  
 एहि अन्तर अँधवारि उठो इक गरजन गगन महिन धरै ।  
 नय मज लोग मुनन धुनि जो जहँ तहँ सब अनिहि दरै ॥

१४ अंशु-१५ नय क' नैद यन्त्र 'अन्ध' व  
 अन्ध' १५ १५ यन्त्र १५ क' १५ १५ १५ १५



११ ✓

लेहों री मा चदा चहोंगो ।

कहा कर्गे जलपुट भीतर को बाहर ओंकि गृहोंगो ॥  
 यह तो मलमलान भक्तभरत कैमे कै जु लहोंगो ।  
 वह तो निपट निहट ही जेयन घरज्या हों न रहोंगो ॥  
 तुमरो प्रेम प्रगट मै जान्यो योगार न चहोंगो ।  
 सूरस्याम कहै कर गदि ल्याऊँ ससि तनुनाप रहोंगो ॥

— — —

१२ ✓

मैया मेरी, मै नहि मान्यन ल्याया ।

भोर भयो गैयन के पाँछे मधुवन माहि पठायो ।  
 चार पहर दसौदट भटकयो माँझ पर पर आयो ॥  
 मै चलरु दियन का छोटो छोटो दिनि दिवस पायो ।  
 ग्यनदल मंद वैर पर ॥ घरम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

.....

.....



नृ जो कहति बल की बेनी ज्यों है ही लंबी मोटी ॥  
 कादव गुह्य नहावन पोंछन नागिन मी भुँव, छोटी ।  
 फाँचो दूध विधावनि पचि पचि देनि न माग्यन गौरी ।  
 मृगमयन चिज जो बँधी होइ भैया हरि-हलधर की जोटी ॥

१६

भैया, मोहि दाऊ बहुत विभायो ।

नामो कहत मोर को लीना, नृ जमुमति कर जायो ॥  
 कहा कही यदि मिस के मारे, खेलन ही नहि जानु ।  
 पुनि पुनि कहत कौन है माना, को है तुमको जानु ।  
 गोरं नन्द जमोदा गारी तुम बन क्याम करीर ।  
 चुटुकी है है हंसन ग्वाल नन्द, मिरर देन दलदोर ॥  
 नृ माफो का नारन मायो दाऊहिं बरहे न रीति ।  
 माफन को मुग परम कमेंन लीर उममान मान मान ॥ नै  
 नन्द ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥  
 नन्द ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

जो न पस्याहि पृथ्वि वनदावहि, अपनी मौंह दिवाइ ।  
 वह मुनि मुनि जसुमनि श्वासन की, गारी देनि रिमाइ ।  
 मैं पठयनि अपने करिका की, आवै मन पदगाइ ॥  
 मूरस्याम मेरो अनि बाधक, मानन ताहि रिगाइ ।

१८ ✓

दे मैरा भैरा चकडारी । ✓

आइ नेदु आरे पर रागो कान्ह मास ली रागो वारी ॥  
 ली आरे होय भ्याम मुरत हा नेल्य रर रीत रीत बट्टु छुंरी ।  
 मैरा बिना ओर का मर्ये बाह बाह हरि कदम निहारी ॥  
 बालि लिये मय मला मंग व मोनन ग्यास मरु को पीरी ।  
 मैमड हरि मैमड मय बालक वर भैवरा-चकडारी का वारी ।  
 दलन ननान बभानी रर रूय विरामी चारवार मूर भाग  
 मूरस्याम लु देवा दे म मूरतन न रर रर रर रर रर रर

तुमहि मिले मैं छनि मुख पायो मेरो कुँहार कन्हैया ।  
कलुक ग्याहु जो भावै मोहन, देखिहुँ माखन राटी ॥  
सुरहाय प्रभु जाँवहु जुग जुग हनि-हलधर की जोटी ॥

20 ✓

झाड़ में गाड़ चरावन डैहों ।

दृग्दाशन के भौति भाँति फल अपने करतें गँहौ ॥  
 गँहौ कबहि कहाँ जनि धारे, देखौ अपनी भाँति ।  
 नानक ननिक पाँड कनिहौ कैमे ज्ञावन हो है गनि ॥  
 प्रात ज्ञान गँहौ लै सावन पर ज्ञावन हो साँनि ।  
 नुन्हरो कमल बनन कुन्डिलैहें रंगन घामहि भाँनि ॥  
 नेरी मौ माहि घामन लागन भूख नही कलु नेक ।  
 दृग्दाशन प्रभु कर्यौ न मानन परे आपनी देक ।

23

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

[illegible]
$$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}, \quad \frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{y}} \right) = \frac{\partial L}{\partial y}, \quad \frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{z}} \right) = \frac{\partial L}{\partial z}$$

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84



## सूर-सहायनी

सुख सुमहानि जानि उर आर,

अवुत्र सुधि उपजावन ।

मदुनन अरु विगमिन को हृदि पर,

अनुदिन जनमे सेवावन ॥

पुण नदी सुधम श्याम को,

गगनि जलधर ध्यावन ।

वसन समान हाव नदि हाटक,

अग्नि भाँरे आवन ।

मुहनादाम विज्ञाहि विषमि करि,

अवनि बलाक बनावन ।

सूरदास धनु लखिन विभाषी,

मनमथ मनोह ललावन ॥ ✓

कनक ललाटे धरन नदीमा वन लल आवन ।

रुख नीला अरु वनमा उरु दुखावन ॥

जलधर हाव वावन ।

सूरदास धनु लखन विभाषी धन धावन ॥

તેદિ જુ અગ અવલોકન થીવ્હો સો તન મન તઠેદી વિરમાવત ।  
નુરદાસ પ્રભુ મુરતો અધર ધરે આદત રાગ પત્યાગ કજાવત ॥

+

૨૬

મેં નયન નિરમ મચપાર્થ ।

અભિ + ભિ જાદે મુગારવિદ થી ઘનને પુનિ મજ જાધે ॥  
નુજાધન જાવનમ મુલુટમગિ ઘેગુ રમ્યાલ વનાધે ।  
ધોતિ વિરગિ મુર મે જો પ્રકાશન મુરુતિ કદન તજાધે ।  
તરફર રપ કદુપ લદોતો મદદિન ધે મન માર્થે ।  
નુરદાસ પ્રભુ ચલન મદનિ વિરતિ તાવ તમાર્થે ॥

+

+

+

૨૭

૧ નિ દલિ કાઠ માલિ મુરતિ થી દાલ દલિ કુદુલ દલિ નેલ દિવાલ ।  
૨ નિ કાઠી દલિ મિલ કુ દિવાલ નાલિ કુદુલ દલિ નેલ દિવાલ ।  
૩ નિ કુદુલ દલિ કુદુલ નેલ દલિ કાઠી દલિ નેલ દિવાલ ।  
૪ નિ કાઠી દલિ કાઠી નેલ દલિ કુદુલ દલિ નેલ દિવાલ ।  
૫ નિ કુદુલ દલિ કુદુલ નેલ દલિ કાઠી દલિ નેલ દિવાલ ।  
૬ નિ કાઠી દલિ કાઠી નેલ દલિ કુદુલ દલિ નેલ દિવાલ ।  
૭ નિ કુદુલ દલિ કુદુલ નેલ દલિ કાઠી દલિ નેલ દિવાલ ।  
૮ નિ કાઠી દલિ કાઠી નેલ દલિ કુદુલ દલિ નેલ દિવાલ ।  
૯ નિ કુદુલ દલિ કુદુલ નેલ દલિ કાઠી દલિ નેલ દિવાલ ।  
૧૦ નિ કાઠી દલિ કાઠી નેલ દલિ કુદુલ દલિ નેલ દિવાલ ।

गांधी नृ के तन को शाभा कहत नाहि बनि आवै ।  
 अघन आदर साधन पुट दाउ मनु नहि लुपिता पावै ॥  
 भजन मेघ अनिरयाग मुमग वपु लक्षित धमन दगमान ।  
 मिर शिखर नवधानु विराजत सुमन सुरंग प्रयात ॥  
 कन्दुक नुटित कमनीय गघन अनि गोरत मङ्गल बेरा ।  
 अपुन रुधिर पराग पर मानो राजत मधुर मुँदरा ॥  
 कुङ्कुम लाल कपोल विरगि गगन मैन कमल दल मीन ।  
 अपर मधुर गुणकानि मनाहर करत मदन मन हीन ॥  
 प्रति मान अग अनग काटि छवि सुन मर्गी पाग प्रवीन ।  
 मूर दृष्टि जह जह परान लहो लहो रहति है सीन ॥

२९

V. 9

एक दिन हरि हस्तधर गीग मालिन ।  
 मान लगे मोघन बन आगन ॥  
 कोउ गावन कोउ वेणु बजावन ।  
 कोउ मिला कोउ नाद गुनावन ॥  
 लखन लैलन लग बन मदिरा ।  
 चरन चली दिन दिन सब लैवी ॥

हमि ग्वालन मिलि गेलन लाये ।

सुर अमंगल मन कं भाये ॥

+

+

+

३०

घने हैं दिहाल कमल हल नैन ।

साह मे अनि बाह दिलाइ नि गृहभाव सुखन लगि नैन ॥

बदन मंगल निहाउ छुनिन पन मनाह मधुष खाए मधु हैंन ।

निलज मंगल भागि बदन बगुन हैंन बोलन मधुष मनीष हैंन ॥

मदनगुरनि भा देम मनामद धुप धन अमि न मदन हर हैंन ।

सुरदास मधु दूत 'दलारी' दिन बम्बन चरिम लुनीनी हैंन ॥

+

+

+

३१

दोहात बदन दिहावन कायदेन कदकन हैं कदुदास ।

हरनि हार कनपन बहानेन दिहव विष्ट दरात ॥

नैनन नैनन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन ॥

नैनन नैनन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन ॥

नैनन नैनन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन ॥

नैनन नैनन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन नैन ॥

३२ ✓

कुनिन कर्म मयूर चन्द्रिका महल सुमन सुषाग ।  
 मानहु गहन धनुष शर लीकें धरपन है घन बाग ॥  
 क्षयरविन विहँसान मनोहर माइन मुरसी राग ।  
 मानहु गुण। पयावि नेरि घन प्रभ पर धरपन लाग ॥  
 कुइल मकर कपोलनि कलवन अग मीकर कें दाग ।  
 मानहु मीन गकर मिलि कोकन शाभिन गरद लहाग ॥  
 नागा निम्बक प्रभुन पदविपर विमुक्त बाह भिन भाग ।  
 दाहिम पुरान मंदगनि सुमननि गारत मुर नर नाग ॥  
 भीमोपास रस जग भरी है गुर सनेह गोहाग ।  
 ऐसी सोभा विषु बिलोकन इन ज्योतिषन कें बाग ॥

+

+

+

३३

गुनहु मयी ॥ कुनिन सुमन काहु हरि का रंग है ।  
 देखा नन देखा रस देभियन कैसी बिनि करि अंगे हैं ॥  
 कैसा मृदु कृतिष बच देगे सुखम बाध भुव नीकें हैं ।  
 कैसा नैन नयन देखा अवलनि कुइल ली कें हैं ॥  
 देखा बाह बलन दुनि कैसी विमुक्त बाह भिन बाग हैं ।  
 देखा नयन रस देखा नन देखा बदन विकारन हैं ।

कैसी जगनाला है शोभित कैसी मुखा विराजत है ।  
 कैसे कर पहुँची है कैसी कैसी अँगुलिचा राजत है ॥  
 कैसी गंगादली श्याम के नाभि चारु कटि मुनियत है ।  
 कैसी कनक मेखल कैसी कछुनो नहि मन गुनियत है ॥  
 कैसे जंघ जानु कैसे हाँउ कैसे पद नहि जानति है ।  
 मूर स्थान अँग अँग की शोभा देखे की अनुमानति है ॥

X

x

✕

23

ग्रेसे सुने नन्दकुमार ।

नम्य निरन्ध्र शशि कण्ठि वाग्धर वरदा कमल अपार ॥  
जानु जव निहारि रंभा करनि द्वारत वारि ।  
काल्पनी पर प्राण वारत देमि शोभा भारि ॥  
कटि निरन्ध्र तनु सिंह वाग्धर किकिनी जु मंगल ।  
नाभि पर हृद आपु वारत रंभावली अलिमाल ॥  
हृदय मुकुतामाल निरन्ध्र वाग्धर अवलि वलाक ।  
करन कर पर कमल वाग्धर चलनि जहाँ तहाँ साक ।  
भुज पर पर नग वाग्धर गये भाग्य प्रताक ।  
उर पर पर नग वाग्धर गये भाग्य प्रताक ।  
अंगुलि पर अंगुलि वाग्धर गये भाग्य प्रताक ।  
अंगुलि पर अंगुलि वाग्धर गये भाग्य प्रताक ।

वधन मुनि कोकिला वारत दशन दामिनि कानि ।  
 नार्मिका पर कीर वारत वारत लोचन भानि ॥  
 कज स्वजन मान मृग शावकनि हारति वारि ।  
 भुवुदि पर मुर चाप वारत तरनि कुडल हारि ॥  
 अलक पर वारत अंधारी तिलक भाल सुरेश ।  
 मूर प्रभु मिर मुकुट धारे धरे मटवर मेघ ॥

x

x

✓x

३५ ✓

गेभी विभि नन्दलाल वारत मुने माई री ।  
 देये जो नैन गंग गंग प्रनि मुमाई री ॥  
 विवि ने दू नैन रवे अग हानि हाम्यो ।  
 भोजन नदि वटन दिने जानिकै मुनायो ॥  
 अचरता प्रवीनता विज्ञाना को जानै ।  
 अथ कैय लालन हसति वारत ॥ अचाने ॥  
 त्रिभुवनवनि लालन काय मटवर वनु बाधे ।  
 लालन दे नैन विने लड नदि बाधे ॥  
 लालन ॥ व ॥ व ॥ ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥  
 लालन ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥ व ॥

३६

मुख पर चन्द्र द्वारों धारि ।

कुटिल कष पर भौर धारों भौह पर धनु धारि ॥  
 भाल केसरि तिलक छवि पर मदन शत शर धारि ।  
 मनु चली बहि सुधा धारा निरखि मनधौ धारि ॥  
 नैन खंजन भृग मीन धारों कमल के कुलंधारि ।  
 मनो सुरसति यमुन गंगा उपमा द्वारों धारि ॥  
 निरखि कुंडल तरुनि धारों कूप शयननि धारि ।  
 भलक ललित कर्पोल छवि पर मुकुन शत शत धारि ॥  
 नामिका पर कीर धारों अथर विद्रुम धारि ।  
 दशन एकल यश धारों धाज दाहिम धारि ॥  
 चिमुक पर चित वित्त धारों प्राण द्वारों धारि ।  
 मूर हरि की अंग शोभा को सकै निरधारि ॥

+

+

+

३७

चोमरी विधिहु ने प्रवीन

कहेय काहि आह कर गेमा कियो जगत आचान ॥  
 चारि बदन उपदेश विचाना थापा धर चर नान  
 आठ बदन गरजान गरवानो क्या बालन यह गान ॥



विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि धान ।  
 हरि-कर-कमल जुगल पर पैठी बाढ्यो इह अभिमान ॥  
 एक बेर भीरति के सिमये उन भियो सब गुन गान ।  
 इनके नौ नंदमाल लाहिलौ, लग्यो रहंत नित कान ॥  
 एक सराल पीठ आरोंहन, बिधि भयो प्रचल प्रसंग ।  
 इन नौ सकल विमान किए, गोपीजन-मानस हंस ॥

वैकुण्ठनाथ-वर वामिनि प्राप्त जा परैन ।  
 नाकी मुख मुखमय मिहामन हरि पैठी यह ऐन ॥  
 अवर मुग पी कुप्रजन टायो, नही भिया नहि तान ।  
 तद्वि मूर जा नन्द मुखन को जाही मो अनुमान ॥

x

x

x

३८

नैना संदे वर क पार ।

नन नहि कष्ट बने इनमौ, नय छवि नय भार ॥

नही नयमान नही नय नय नय नय प्रक'स ॥

नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय ॥

नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय ॥

नय नय नय नय ॥



जहे निज मत्र जह ग्यान जह ध्यान है,  
 दरस दपति भजन-भार गार्ड ।  
 जहे माँगौ बार बार प्रभु मूर के नैन शोश,  
 रहै, अह नित्य सर-नेह पाऊँ

— — —

४१ ✓

अदभुत कीमत् देखि समी री, भी पुन्दावन होइ परी री ।  
 जन जन हरिन मदिन मौदामिनि, इन मुदिन राधिका हरी री ॥  
 इन बन पानि शोभित इन सुन्दर धाम बिशाम मुदेम गरी री ।  
 जन जन गगन इहाँ गुरुजी धुनि, जलधर उनइन अमृत भरी री ॥  
 अदि इन्द्र धनु इन बनमाया, अनि विविध हरिकण्ठ धरी री ।  
 मूर माय प्रभु कृअरि राधिका, रजन को मोछा दूर करी री ॥

— — —

कृष्ण-प्रवास तथा नन्द-  
यशोदा आदि  
की पीड़ा



1

४२ ✓

मधुरापुर में शार पश्या ।

गजन कम वंश सद माजे, मुग्य वा गोर हरया ॥

पोंरो भया फेकरी अधरन हृदय अतिदि हरया ।

नद महर के सुत दाउ मुनिके नारिन हप भरया ॥

इन्दु घदन नव जलद मुभग ननु दाउ रग नैन कया ।

नूर श्याम देखन पुर नारी उर उर प्रेम भरया ॥

2

४३ ✓

रथ पर देखि हरे दलराम ।

निरगिध कामल चरु नृगिन हृदय मुकुता दाम ॥

मुकुट कुटिल प - उर उर अलुल अ - उर

राज - मु - उर कुटिल गोरन - मुग्य -

उर न केम उर उर उर उर उर उर उर

दात उर उर उर उर उर उर उर उर

जोरि कर विधि सों मनावनि लै असीसौ नाम ।  
 न्हान बार न स्वमै इनका जुगल पहुँचै धाम ॥  
 कम का निबंरा द्वंद्व करत इन पर ताम । न  
 मूर प्रभु नरसुवन दोउ दस नाम उपाम ॥

४४

देव री आजु नैन मरि हरिजु के रथ की रांभा ।  
 बांग यल तप तप तीरथ मन कीजन है जेहि लामा ॥  
 चारु चक्र मणि स्थिति मनोहर चबल चमर पनाका ।  
 खेन छत्र मनो गरि प्राची दिशि चंद्रावध्यांभिगिराका ॥  
 घन मन श्याम सुदेश पीन पट शीरा मुकुट उर माला ।  
 अनु शमिति घन शवि सागगल प्रगट लह ही काला ॥  
 नयन छवि कर अंग शम्यमिति सुनिषन शब्द मरासा ।  
 मानदु अरुण कमल महल मे वृजल हैं कमल डसा ॥  
 मदन गाथा देखियन हैं मध अथ दुग्ध शाक बिसारी ।  
 पैठ हैं मुकुलकमुन गाकुन नैन जा इरी मिशारी ॥  
 आनंदन चित जननि नान दित कृष्णमिषन त्रिय भाए ।  
 मूरदाम बहुकुल दिन कारण माग मकुपुरि आए ॥

४५

वे देवो आगत हैं प्रज ने धने धनमाली ।

घन तन श्याम मुखे पौन पट सुन्दर नैन विशाली ॥  
जिनि पहिले यमना पौदे पय बाँधत पूतना दाली ।  
अथ एक यन्त्र अरिष्ट केशी मणि जल ते काटयो बाली ॥  
जिन हाति शकट प्रलव नृणापुन इष्ट प्रनिष्ठा दाली ।  
एते पर नहि नजल अयोड्यो पपटो कम कुचाली ।  
अथ विधु बदन विलोकि सुकोवन भवण मुनन ही आली ।  
धन्य सुगोकुल नागि मूर धनु प्रकट प्रीत प्रनिपाली ॥

४६

एई भावो जिन मधु मारे नी ।

जन्मत ही गोकुल सुख दीन्हो नंददुलार बहुत सारे री ॥  
केशी कृष्णवर्त वृषभासुर हतो पूतना जब घारे री ।  
इष्ट कोप बधेत गिरि धारथो महाबल प्रज टारे री ॥  
बल समेत नृप कम बोलाये रचे रङ्ग अति भारे री ।  
मूर अशीश दिन सब सुन्दरि जावाह अपनी माँ प्यारे री ॥



४७ ✓

भये मन्त्रि नैन मनाथ हमारे ।

मदन गोपाल देख्यन ही मप्रनी मय दुख शोक बिमारे ॥  
 पटप है मुकलकमुन गोकुन लेन ओ इहाँ मिथारे ।  
 मऊन युद्ध मनि कम कुटिल मनि छल करि इहाँ हैंकारे ।  
 मुलिक अरु पाणूर शैल मम सुनिथन है अति भारे ।  
 कामल कमल समान देखियन ये यशुमनि के वारे ॥  
 है यह जीनि विधाना इनको करहु महाप मवारै ।  
 मूरदाम निरजीबहु युग युग दुष्ट दसै रोज नरदुकारे ॥

✓

४८ ५-

भोर मयो जागी नदलाक ।

नदराइ निरखन मुख हग्ये पुनि आये मय ग्वाल ॥  
 शीम गुरी अति परम मनाहर कषन कोट बिराल ॥  
 करन भग मय गुर प्रभु मा दान इहाँ भूपाल ॥

✓



तब बोले हरि नंद सों मधुरे करि बानी ।  
 गगं वचन तुम ने कही नहि निहचै जानी ॥  
 मैं आयो समार में मुख मार बहारन ।  
 तिनको तुम घनि घन्य हो कीन्हों प्रविहारन ॥  
 मानु पिता मेरे नहीं तुम से अरु कोऊ ।  
 एक बेर ब्रज लोग को मिल ही मुनौ मोऊ ॥  
 मिलत हिलन दिन चारि को तुम तो सब जानौ ।  
 मो को तुम अति मुख दियो मो कदा बस्यौ ॥  
 मधुग नर नारी मुनै क्याकुल ब्रजपासी ।  
 सूर मधुपुरी आउकै ए भण अविनासी ॥

+

+

+

निठुर वचन त्रिनि कही कम्हाई ।  
 अतिहा दुमल मथा नहि जाई ॥  
 तुम हेमिकै चानन ए जानौ ।  
 मर नयन मरन हे पानौ ॥  
 अब ए बाध कबहुं त्रिनि बासौ ।  
 नरन चलो नर आगन दासौ ॥  
 वध नदावन वधुमति देदे ।



कैहों कहा जाइ यशुमति सों जब सन्मुख उठि ऐहें ।  
 प्राण समय दधि मथत छाँदिकै काहि कहैंऊ देहें ॥  
 बारह वर्ष दयो हम ठाढ़ो यह प्रताप बिनु जाने ।  
 अब तुम प्रगट भए वसुदेवसुत गर्गवचन परमाने ॥  
 कज हम लागि महारिषु मारे कत आपदा बिनामी ।  
 छारि न दियो कमल कर ते गिरि वधि मरने ब्रजवासी ॥  
 वासर मंग सखा सब लीन्हें टेरि न येनु चरैहो ।  
 क्यों गहिहैं मेरे प्राख दरश बिनु जब संध्या नहि गेहो ॥  
 अब तुम राज्य करौ कोंदिक युग मातपिता मुख्य रैहो ।  
 कबहुँक तान तान मेरे मोहन या मुख्य मां सो कैहो ॥  
 ऊरध रवाम बरगु गति धाक्यो नैनन नीर ॥ रहाइ ।  
 सूर नंद बिदुरे की वेदन सो वै कहिय न जाइ ॥

✓

+

+

+

५४ ✓

वर्गि जन का । वर्गि नंदगड ।

हमहि तुमहि मन मन का जाना और परचा है जाइ ॥

बहुत किया जीवनवाक्य हमारा मा नहि जाने जाइ ।

वही रहे नहि नदी तुम्हारे हाथ जिन बिमगाइ ॥



कहियो भाइ यशोदा आगे नैन नीर जिनि दारौ ।  
 सेवा करी आनि सुन अपने कियो प्रतिपाल हमारौ ॥  
 हमें तुम्हें कछु चतर नाही तुम जिय ज्ञान विचारौ ।  
 मूरदास प्रभु यह विनती है उर जिनि प्रीति विमारौ ॥

+

+

+

५७

मेरे मोहन तुमहि बिना नहि जैरौ ।  
 महरि दौरि आगे जब पड़े कहा ताहि मैं कैहौ ॥  
 मानन मधि राख्यो हैंहे तुम हेतु चली मेरे वारे ।  
 निदुर भार मधुपुरी आइके काहे असुरन मारे ॥  
 देव पायो वसुदेव देवकी अह सुख सुरन दियो ।  
 यह कहन नैव गोप मया सब विदरन यहन दियो ॥  
 नव माया जइना कबजाई ऐसो प्रभु पदुराई ।  
 मूर नन्द बाबोधि पठावन निदुर उमोरी जाई ॥

+

+

+ ✓

५८

नन्ददि कहन नहि मज न द

‘कानक मधुर’ मज न द आनन प्रिय कनक

या वारुण ह्ये भविषीं दृष्टुं ह्ये वारु ।  
 निरुक्तं नै क्व वारुणं नानि तन्मिह वारु ॥  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ।  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ॥

५९

युन मेरी प्रभुता बहुत होगी ।  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ॥  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ॥  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ॥  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ॥  
 नै वारु वारु वारु वारु वारु वारु वारु ॥

६०

युन मेरी प्रभुता बहुत होगी ।

युन मेरी प्रभुता बहुत होगी ।  
 युन मेरी प्रभुता बहुत होगी ।  
 युन मेरी प्रभुता बहुत होगी ।





હુ મુખિ મ રહી તન બી જહુ ભરખતીત પહે પુદિ ।  
 હુસ જાત વિરત પુનિ મધુનન મન પુનિ જતિ અભાદ ॥  
 રદ મિત્રુ મે પે એત વિત મિરોદિ બલે અદાદ ॥  
 ર રવામ અલવામ દરિદરે મન અમા નિમવાદ ॥

૬૨

આર આર મન નામતિ માવા ।

રવામુના મિત માતન અભ અભાદ ॥

આવત ગમિ વાપ ગીદ વાપા ।

દિલ માનવ મિત મદ અભાદ ॥

મદ મન મદદ ગમિ

માનવ દિલ મે ગમિ દે

મનમાની દરમિત ગમિ મ

માતિ દરિ મદ અભાદ ॥

દરમિત મન માતિ

દર માતિ દરમા ॥

દર માતિ મન માતિ

દર માતિ મન માતિ

## સૂર-વદાનથી

હ'દુ તિજા વર આહુ ગુલાઈ માને રહિયે માન ।  
 ડાહ્યા ધવયો જનર નદિ ખાતે આજન ગ્રામ ન ભમાન ॥  
 બળ વચવાન સ્ત્રીન નહુ કશિન ગ્યો વધારિ વસ વાન ।  
 રક્ષાજાન ભન વદુન મૂર પઠિ જને સદ પશ્ચિનાન ॥

૧૧

મિત્રિ કહિ સદ ન વળર ચીર્યો ।

વચ વાસ મિત્રિ તમા વચ ન મુદિ મનદે ચિત્ત યિત્તિ કામ્યો ॥  
 વચ ન વચાન વચિ કાઈ મુદિ વુલ્લ ભાસ વાલ માનિ ।  
 તમ વર વચ આ ન વચ મોદયો મુલ આપના વિચ માનિ ॥  
 કા વચે વચ વચ ભાસ મિત્રિન વચન મિત્ર માન્યા ।  
 વચ ભાસ દુન ન વચિ ॥ ૧ ॥ વચન વચ ભાસ આપ્યા ॥  
 કા ભાસ કા ભાસ કા ભાસ મિત્રિ મિત્રિ મિત્રિ મોદય મોદય ॥  
 મોદય મોદય મોદય મોદય મોદય મોદય મોદય મોદય ॥

૧૨

વચ ન વચ વચ ન વચ

વચ ન વચ વચ ન વચ વચ ન વચ વચ ન વચ

काहू सुधि न रही तन की कछु लटपटात परे पाई ।  
 गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन मन पुनि उतहि चलाई ॥  
 विरह मिन्धु में परे चेत विन ऐसेहि चले महाइ ।  
 सूर श्याम चलराम छाँड़िकै प्रज आए नियराइ ॥

६३

धार धार भग जोषति माता ।  
 व्याकुल दिन मोहन यल भ्राता ॥  
 आवत देखि गोप नैद साधा ।  
 विवि बालक विनु भई अनाथा ॥  
 धाई धेनु चन्द ज्यों ऐसे ।  
 माखन बिना रहै वां कैसे ॥  
 प्रजनारी हरपित सध धाई ।  
 मदरि जहाँ तह आतुर आई ॥  
 हरपित मान गंदिनी धाई ।  
 हर भरि दलधर लेहु पन्दाई ॥  
 देखे नद गोप मय देखे ।  
 चल माखन का नदी न परे ॥  
 आतुर मिलन पति प्रजनारी ।  
 नर मय मय नर मय मय

रनाम राम मधुरा नति नंद अत्रदि आए ।  
 बार बार मरि करनि जनम भूग करान ॥  
 कहे बरनि सुनी मरी दुराग की करनी ।  
 नर सुनि मंद व्याकुल हो बरे मरदि परनी ॥  
 मेरि देखि गुरुमि परनि व्याकुल अत्रनारी ।  
 गुरुच प्रभु कीन दाग वन को नु विमारी ॥

६५ ✓

इति नम नैति कीर्त्तनी मंद ।

उदि कहे जनम सुन साजन सुन सावन सति मर ।  
 हे नम नर सावन मरमाओ के सुन सुने बर ।  
 मरमाओ नैति मरमाओ को नै मरमाओ आनंदद ।  
 मरमाओ नैति मरमाओ को नै मरमाओ आनंदद ।  
 मरमाओ नैति मरमाओ को नै मरमाओ आनंदद ।  
 मरमाओ नैति मरमाओ को नै मरमाओ आनंदद ।

मिनें जात बहुत दुख पायो गैरि परी यहि मेरे ।  
 सोनुन गाइ फिगत है दह दिश बने चरित्र न धोरे ॥  
 सोनिन बरी गम-दशम्य की प्राण लजे दिन हरे ।  
 सो ननु सो कहनि यशोदा प्रबल पाप सब मेरे ॥

६७

यशोदा बान्ह बान्ह ये बूने ।

पटि न गरी निहारो चारी बैसे मारग सुने ॥  
 १३ तनु लो जात दिन देगे कब सुम दोने पृथ ।  
 सो दलिया मेरे सुँवर बान्ह दिनु कटि न गए है दृक ॥  
 पुन हनु धुम है बरग कटो पले बरगदोमन कटि घा ॥  
 सो यशोदा विदग्ध की हम है देन बघाई काल ॥

६८

रह रही सुनसी बरग बरग ।

सो सोनिन, दुख बरग बरग बरग बरग बरग बरग ।  
 सो सोनिन, दुख बरग बरग बरग बरग बरग बरग ।  
 सो सोनिन, दुख बरग बरग बरग बरग बरग बरग ।  
 सो सोनिन, दुख बरग बरग बरग बरग बरग बरग ।

सुधि न रही अति गलित मान भयो अनुद्धति गयो सयो ॥  
 कृष्ण छाँड़ि गोकुल कत आग धाम्यन दूष रणो ॥  
 तजे न प्राण सूर दराग्य लो हुनो जन्म निशयो ॥

+

+

+

६९ x 1

मेरो अति प्यारो नैद नंद ।

आग कहीं छाँड़ि मुम उनको छोँच करी मनि मर ॥  
 बल मोहन दोष पीढ़ नवन की निरमल ही आनंद ।  
 मरघर छोँच कुमाँदिति सत भन, रमाव चनन बिन नंद ॥  
 काँटे न गौड़ परे वसुदेव के धाति पाग मरे कंद ।  
 मूरदाम मनु आचके पशवट्ट गजल लोक मुनिवद ॥

✓

-----

७०

✓

मह नू मारिचोई करनि

मिमति आग कटि वा आनन अक जे मरि मरान  
 ममई कत नीवम जे मरिनि ॥ ॥ ॥ ॥  
 कृष्ण द्विज को नर ना कृष्ण आन नर को क ॥

नृपति धर्म युनाह पठयो बहुत पै जिय हरति ।  
 इष्ट पद विपरीत मो मन माँग देखी परति ॥  
 गीतगोविंद मोह अथ यही कत अरति ।  
 मूर मथ किन पैरि राखेह पाह अथ केति परति ॥

७१

कहा न्यायो लजि प्राण जीवन धन ।

रास कृष्ण कहि मुनि, परो घर यशदा देखन लोचन ॥  
 विदमान हरि कथन भवमा मनि पैरे गगन प्राण छूटि मल ।  
 गुना यह दमार्थ की लड नहि लाज भई मेरे मन ॥  
 भावनात अति भया नन्द अति हास बना पाँतलाने तिन तिन ।  
 मूर नन्द विरि कानु कानुपुरा दयाबहु कृत कवि बोधि जनन ॥

७२

कहा न्यायो लजि प्राण जीवन धन

रास कृष्ण कहि मुनि, परो घर यशदा देखन लोचन ॥  
 विदमान हरि कथन भवमा मनि पैरे गगन प्राण छूटि मल ।  
 गुना यह दमार्थ की लड नहि लाज भई मेरे मन ॥  
 भावनात अति भया नन्द अति हास बना पाँतलाने तिन तिन ।  
 मूर नन्द विरि कानु कानुपुरा दयाबहु कृत कवि बोधि जनन ॥



मुरली नदि सुनिचन ब्रज मे सुर नर मुनि नदि कान है बा ।  
सूरदाम प्रभु के बिछुरे ते कोऊ नदि मोहने अर ।

— ✓ ७३ ✓

स्वात्मन कही ऐसी जाइ ।

भये हरि मधुपुरी राजा बड़े वरा कदाइ ॥

सुन माग्य बदन बिरद्वि करणि बसुनौ तान ।  
राजभूषण अलङ्कार धारण करि कहत स्वतान ॥  
मानु विनु बसुनेन देवै नन्द यशुमानि तादि ।  
गढ़ सुनन जग नैन कारण मीति कर पक्षिनादि ॥  
मिली बुद्धिमा अने भैटे सां भई अरुध ॥  
सूर प्रभु वरा भग नाके करन जाना वर ॥

— ✓ ७४ ✓

हरि की वचो कान न जानी ।

कही कल कही कथा जगम वाजनिदि विचन नृपति सैवराजी ॥  
अब प्रभु काने यथा मिथिल विनु माहुन वणि विचनगती ।  
दुग्ध प्रकाश नृपति अिन लीन विदुषन गगनगती ॥

श्री रामोऽपि हारी योऽयं मद्गद हारी ।  
 प्रभु योऽयं लज्जितं यत्नं मद्गद हारी मन्मथनी ।

७५

श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।

श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।

७६

श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।

श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।  
 श्री रामोऽपि योऽयं मद्गद हारी ।

७७ ७६

यद्यपि मन मममावन लोग ।

शून्य होत नवनीत देखि मेरे मोहन के मुख योग ॥  
 निशिचामर छनियाँ मैं लाऊँ वासक लीला गढ़ ॥  
 जैसे भाग बहुरि होइ मोहन मोद लवाइ ॥  
 आ कावण मुनि ध्यान परै शिव अंग विभूति लगै ॥  
 गो बाणकसीसा घरि मोकुल उमयन साथ बैधाइ ॥  
 विद्वान जहाँ कछ को दिख्य हरि विधोग कयो मरिद ॥  
 गुरवार प्रभु कमलनैन विभु बीजे विधि मज रदिग ॥

—

७८

मन्मथन कीजै टाँकि बजाइ ।

देह बिदा मित्रि जाहि मनुगुरी जई मोकुल के गढ़ ॥  
 नैनन कछ मया कयो मृदुला जलदि बिबा मय गढ़ ॥  
 गुराणि दसम्य मनी है पर मरिच गुण गढ़ ॥  
 मृदु मन्मथ विदित न मोकुल मनद ॥ ७८ ॥ ७९ ॥  
 मृदु मन्मथ मनु गम बजाइ बस मय ॥ ८० ॥ ८१ ॥

（一）

（二）

（三）

（四）

（五）

（六）

बधी इतनी कहियो बात ।

तुम बिनु इहाँ कुँवरघर मेरे होत भिते जतपान ॥  
 बधी अपामुख दरन न टारे बालक बनहि न जात ।  
 भगविजरी केहि मानों राखे निरसन को अकुमान ॥  
 गारी गाय सकल लघु दीरघ पीन बखु कुरा गात ।  
 परम अनाथ देखियत तुम बिनु केहि अवलिये प्रात ॥  
 काहू काहू के देखत नथ धौं अब कैसे जिय मानत ।  
 यह अवधार आगु लीं हे अज कपट नाट छल टानत ॥  
 समष्टि विशि मे रहित होत है दावानल के बोट ।  
 साँधिन मैत्रि इतन समुल है नाम कवन ई भोट ॥  
 न सब दृष्ट होने अरि जेने भए एक ही पेट ।  
 मर्या मर महाइ बरी अब समुझि पुरानन डेट ॥



रूपे, तुम अत्र का समा रह्यो

॥ रीति बह भिदि जायसी, प्रान-वध विजय  
 का कारण तुम कहे माची मा माची ॥ ११ ॥  
 भिन्नो बीच बिह वरमाय, उमन हा बिरो रण  
 दम ररबीन बनुर कहियन हो, ममन निछ रण हो  
 मम वृद्धन अवलम्ब होन को, निदि निदि वरमाय हो  
 बर मुमुक्षानि मयोहर विनवनि, वैम जई टो  
 जाग मुगनि चह मुचनि परमनिधि,  
 निदि वर कवजनपन जु वसन हैं, निदि निगुन क  
 मुरनाम सो भजन बहाई, आदि दूसरो,







गङ्गा के तट पर स्थित यह नगर  
 भारत का एक प्रमुख नगर है, जो बहुत बड़ा है ;  
 यहाँ पर बहुत सारे लोग रहते हैं, जो बहुत  
 धनवान् हैं और बहुत सारे व्यापारियों के  
 यहाँ पर बहुत सारे दुकानें हैं, जो बहुत  
 बड़े हैं और बहुत सारे लोग यहाँ पर  
 रहते हैं, जो बहुत धनवान् हैं और बहुत  
 सारे व्यापारियों के यहाँ पर बहुत सारे  
 दुकानें हैं, जो बहुत बड़े हैं और बहुत



क्यौ, ना हम बिरहिन, ना तुम दास ।  
 परत सुनत परत प्रान रहत हैं, हरि तजु भजतु अवास ॥  
 बिरही मीन मरै जल बिहारे छाँकि जीवन की काम ।  
 दाम भाव नहि तजत अपादा, बर सहि रहत पियास ॥  
 पट्ट पाम पट्ट मे बिरह, बिधि कियौ नौर निरास ।  
 राखि रहि ब' दास न मानत मसि सँ सहज उदास  
 ॥ १४८ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥

निमित्त पक्षो नैत नहि सञ्जन, यमि ओवन जुग योने  
 म्यानि पनह देमि वदु ज्ञान, मये न प्रेम छट गीने ॥  
 कहि छानि, कयो रिमगनि वे वार्ने महु ओ कहि मत्रगत्रे ।  
 हेमै मृगमय हम दीहैं, लह देह के काउँ ॥

+

+

+

८७ . . .

कहिचं स्वाम सो समुदाइ ।

बह जगो नहि मन्त्र मंहरन मनौ मुहारी पाइ ॥  
 लह बर मन्त्रन के कात्रे गले में कटकाउँ ।  
 कही सिद्धन माना जिनि मन्त्रन लागन मंहरि बखदै ॥  
 कही बर इहे लख कही नहि कही के वई ।  
 मन्त्रम का इजरी का शिव लखे बन्त देसाइ

१९३३ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९३५ ई. में यह विद्यालय दुर्गापुर जिले में था ।

+

+

८६

संविधान के अन्तर्गत ।

१९३३ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९३५ ई. में यह विद्यालय दुर्गापुर जिले में था ।  
१९३७ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९३९ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९४१ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९४३ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९४५ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।  
१९४७ ई. में यह विद्यालय जगदगुरु राम कृष्ण मठ में था ।







करत अन्याय न बरजौ कबहुँ बंढ मायन की बोरी ।  
 अपने जियत नैन मरि देखौ हरि हलधर ॥ ओरी ॥  
 एक बेर है जाहु इहाँ लौ अनत कहुँ के उत्तर ।  
 बारिहु दिवस आनि सुख दीजै सूर पहुँचै सुतर ॥

— — —

९१ ✓

जज से पावस पै न टरी ।

शिशिर बसंत शरद गत सजनी बीसी औषि करी ॥  
 छनै छनै घन बरषत बष घर सरिता मलिन मरी ।  
 कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु कुचयुग पारि परी ॥  
 ताहू में मगट बिचम प्रीषम जनु इतयो ताप मरी ।  
 सूरदास प्रभु कुमुद चन्द्र बिनु बिरहा तरनि जरी ॥

+

+

+

९२ ७५

अब वर्षा को आगम आयो ।

ऐसे त्रिपुर मयो नैदनदन मदेसो न पटाया ॥  
 बादर घोर छटे चहुँ दिशि ते जमधर गरजि मुनाया ।

एकै झूले रहो मेरे जिय बहुरि नहीं बज छायो ॥  
 दादुर मोर पयोहा दोलत कोकिल शब्द सुनायो ।  
 सूरदाम के प्रनु सों कहियो नैनन है भर लायो ॥

९३ ✓

ब्रज पर यदरा जाये राजन ।

मधुबन को पठए मुन सजनी फौज मदन लग्यो साजन ॥  
 प्रांसारध्र नैन चातकजल पिक मुख बाजे बाजन ।  
 बहूँ दिसि ने तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन ॥  
 कहियत हुते श्याम परपीरक जाए शङ्कर के काजन ।  
 मूरदार भीषनि की महिमा मथुरा लागे राजन ॥

९४

देसियत बहूँदिसि ते धन पेरों ।

मानो मल मदन के दधियन बल करि वन्दन कोरे ॥  
 श्याम सुभग तनु चुकत गटमट दगल कोरे कोरे ।  
 बसत न पौन महाबलत पी मुगल न कह्यो कोरे  
 दल दल बल निबसि नदन डल दूर दूर कोरे कोरे  
 ॥ १ ॥ निबसि दगलीति दौत दल कह्यो कोरे कोरे ॥

तब तेहि समय आनि गंगानि प्रप्रचनि सो दर जोरि ।  
अब मुनि मूर कान्ह के दरि विन गगन गान त्रैमे सोरि ॥

९५ ✓

T O ✓

सत्र पर सति पावस पुन आया ।

मूरवा मुनि बड़ी कमट्टे विमि गति निमान बजायो ॥  
आनक भाग हुना पै वागन करत आचार्य कोयवा ।  
इनाम लदा गत्र कागज बाँझ रथ धिन बगवानी मगोयच ॥  
नामिनि कर कागज बूँद मर इति विधि सति मैना ।  
निपाद लया बरगो । सत्र आचन आय कोत्रनि मैना ॥  
इस अवता जानि कै तुम बल कदा कीन विधि कीतै ।  
तूर इनाम अब क इति ओया आनि सति सत्र सोतै ॥

+

+

+

९६ ✓

T O ✓

तब तेहि वर का दिन आ के जो निज अनाम गाव जन आरणा ।  
सति सत्र व बल बरगन कागज का ॥ सत्र सो निज मैना मोनायवा ।  
सत्र सत्र बूँद के मगन बूँद को सति सत्र व कागज ।  
कव का मूल रीतय सति सत्र व कागज का सत्र व कागज ।

एव वल्लभ हूँ या प्रज नें कहूँ देव न ऐसी डारयो ।  
 कदर नूनि भवनक लागे विधिना धरि कम अवतारयो ।  
 एव नुगति करे को हमारी या प्रज कोऊ नाहि हमारयो ।  
 मृदम कवि विरह विरहिलो मोरिन पिडलो प्रेम मेंमारयो ॥

+

—

+

९७ ✓

पहुँचि वन बोलन लागे मोर ।

एव संभार नन्दनन्दन को नूनि सादर को धोर ॥  
 जिनको पिय पदम निधाने सो नित्य परी निठोर ।  
 मोहि बहुत दुख हरि दिहुरे को रहत विरह को जोर ॥  
 पानक रिक्त बखोर पनीहा ए मध ही निति धोर :  
 मृदम प्रभु देगि न निरह जनम परत हूँ धोर ॥

+

+

+

९८ ✓

यहि वन मोर नहीं ए कामवान ।

विरह स्नेह धनु पुहुप भुङ्ग गुन करि लरैया विपु मनान ॥  
 लयो धेरि ननों मृग बहु दिशि नें कदक कदोरी नहि कमान ।  
 पुहुप मेन घन रचिन पुगज मनु झोंडन कैसा वन निधान ॥

महापुरुषिन मन मदन प्रेमास जनेनि मरे मै मै न बन  
इदि अवस्था भिते मूरशम प्रभु बहुरो नानागदै मोहनर

९९

मर्था री चानक मोदि त्रियावन ।

जैमेदि रैन रटनि पिय पिय मैमेदी बइ पुनि पुनि गवन  
अतिरि मुदण्ठ दाहु प्रीतम को तल जीम मन बावन ।  
आपु न पीवन मुधारम मजनी बिरदिनि कोरि पिछवन  
जो ए पदि सहाय न होने प्राण बहुत दुख पवन ।  
जीवन मफल मूर ताही को काज पराव कावन ॥

१०० ✓

चानक न होइ कोउ बिरदिन नारि ।

अजहूँ पिय पिय रजनि मुरनि करि मूँडेदि मंगल वारि ॥  
अति कृशगात देखि मरि याको अहनिशि बागुी रटन पुकारि ।  
देखी प्रीति कापुरे पनु की आन जनम मानन नहिं दारि ॥  
अब पनि बिनु ऐसा लागन यह जो मरकर गोभिन चित धर  
त्यों ही मूर जानिए गोपी जा न कृपा करि मिलेद मुरारि ।

बहुन दिन जीवो पपीटा प्यारो ।

८२

बासर रैन नौव लै बोलत भयो विरह ज्वर लागे ॥  
 आपु दुखित पर-दुखित जानि जिय पातक नाउं सुन्दारो ॥  
 देखो सकल विचारि सखो जिय बिछुरन को दुख न्यागो ॥  
 जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम पाण अनियारो ॥  
 सुरदास प्रमुखाति बूँद लगि तज्यो सिंधु करि म्यारो ॥

+

+

+

१०१ ✓

हौं तौ मोहन के विरह जरी रे तू कत जारत ।  
 रे पापी तू पंखि पपीहा पिउ पिउ पिउ अधराति पुकारत ॥  
 सब जग सुखी दुखी तू जल बिनु तऊ न तनु की बिथहि बिचारत ।  
 कहा कठिन करतूति न समुझत कहा मृतक अवलनि शर मारत ॥  
 तू शठ घकत सतावत काहू होत उई अपने उर आरत ।  
 सुर श्याम बिनु व्रज पर बोलत हठि अगिलंक जनम भिगारत ॥

+

+

+

१०२

शरद समैह श्याम न आए ।

को जानै काहे ते मजना कहें विरहीन चिरमाए ॥

महामुदित मन मदन प्रेमरस समेशि मरे मैं मैं जान ।  
इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु बदरयो नानागदौ ओवनदान ।



**राष्ट्रीय री ब्यालक सॉडि नियामन ।**

जैमहि नैन रहनि पिय पिय नैमही वह पुनि पुनि लावन।  
अनिदि मुकुण्ड दाहु पीतम का लाल जीम मन लावन।  
आपु न पीवन मुखारम सजनी बिरहिनि कोनि पिआवन।  
जो न पदि सदाय न कोने माय बहुत दुख पावन।  
जीवन मायस सूर लारी को काज पराय लावन।



ਅਨੁਸਾਰ ਜੇ ਹਾਇ ਕੋਰ ਵਿਧਿਨ ਨਾਹਿ

[illegible]





महामुदित मन मदन प्रेमरस समेंगि मरे मैं मैं जान ।  
इहि अवस्था भिले सूरदास प्रभु बंदर्यो नानागदै ओवनदान ॥

९९

मन्थी री बालक मोदिं त्रिवाचन ।

जैमंदि रैन रटति पिय पिय नैमंद्दी बड़ पुनि पुनि गावन ॥  
अनिदि मुकण्ठ दाहु प्रीतम का लाल जीभ मन लावन ।  
आपु न पीवन मुषारस सजनी बिरदिनि बोजि विआवन ॥  
जोग पछि सदाय न होने प्राण बहुत दुख पावन ।  
जीवन मज्जल सूर लाई को काज परान जावन ॥

१०० ✓

आनक न होइ बोज बिरदिन नारि ।

काजई पिय पिय रजनि मूरनि बरि भूटैदि मीगन बारि ॥  
अनि दृगगान नैम्य समि बाका अरनिगि बागि रटन दूकरी ।  
उम्मी प्रीति बान्धु बान्धु को आन जनन मानन मदि नारि ॥  
अब बनि विनु गगन लागन पद अग्य गगनर गगनिन विन नारि ।  
आ ही सूर अनिद गगनी न न दृग कदि मिलतु मूरारि ॥



महापुद्गल मन मदन प्रेमरस छमैगि मरे मैं नैन जान ।  
इहि अवस्था मिले सूरदास प्रसु बरखो नानागदै जोवनदान ॥

९९

सखी री बातक मोहि जियावन ।

जैमेहि रैन रटति पिय पिय तैमेही बह पुनि पुनि गावन ॥  
अतिहि सुकण्ठ दाहु प्रीतम को तारु जीभ मन लावन ।  
आपु न पीवन सुषारस सजनी बिरहिनि बोलि पिआवन ॥  
जो प पक्षि सहाय न होले प्राण बहुत दुख पावन ।  
जीवन मफल सूर ताही को काज पराप आवन ॥

१०० ✓

बातक न होइ कोउ बिरहिन नारि ।

अजदू पिय पिय रजनि मुगनि करि मूटेहि माँगन वारि ॥  
अनि कुरागान देखि मगि याको अहनिशि बाग्यी रटन पुकारि ।  
देखी प्रीति बागुरे पशु की जान जनम मानन नहि नारि ॥  
अब पनि धिनु मेसा लागन बह उषा मगवर मोहित धिन वारि ।  
सो ॥ सूर जानिए गोपी जो न कृपा करि मित्रदू मुगारि ॥



कदम्ब कदम्ब कदम्ब कुन्दमिन द्विनि लहरा मनि उर।  
 मर मरिका मरगा मर उरुवच कचिदुव कनर मुनि।  
 कद्वे मरुद मरुद कद्वे हनि दारुदमान जिनि।  
 विद मर गुरु मरु निरि मुन्दरि रवि मरि मरि निर।  
 मुरो मेरु दुषार जनक विरहाम बन्दन हर।  
 कद्वेदि काम मूर निरिजे को मर प्रवनाय शर।

x

x

x

१०३ ✓

रूढि राई राशि रोम्बराई ।

मनुष्योदि मारि भसम कियो चाहत साजन मनो कलहु तु री  
 पादि ते रषाम कदाम देखिये मानो धूम रसा लष  
 ता ऊपर वी देत किरानि उर उरुगल काउने यदि इन का  
 राहु वेतु राउ जोरि मरु करि कदि इदि ममे मरुवदि न  
 धमे ते न पधि जाग पाव मे कहत मूर विरहिन दुषार।

x

x

x

१०४

यद राशि गीतस काहे ने कदियत ।

मोनचेत अभ्युक्त आनन्दित गाने लाहिन कदियत ।

विरहिन कट कमलनि प्राप्त बहू अपकारी रथ नदियत ।  
 गुरदास प्रभु मधुवन गौने सो इतनी दुख सहियत ॥

१०५

बोड बरजोरी या चन्द्रति ।

बोडरी गंध बरत हग ऊपर कुमुदिनि कुल जानदति ॥  
 बरा बरो बपों रथि लमबर कमलबलारथ बसे ।  
 बल न अपल बल धिरे रथ विरहिन के ललु जल ॥  
 बल रथ रथि बल बोल लीलनि बल बल ॥  
 बल बल रथ रथ बोल बोल बोल बोल ॥  
 बोल बल रथ रथ बोल बोल बोल बोल ॥  
 बोल बल रथ रथ बोल बोल बोल बोल ॥

10

11

उद्योग-मंदेश



परिने प्रनाम मैराइसी ।

ना पीछे मंगे वाक्तागन कहियो असुमति माइ सो ॥  
 एक बार तुम बरमाने लौ जाइ सब सुनि लीगो ।  
 कहि इभाधनु महति लौ मेरी समाचार सब दीगो ॥  
 भा दासा आदि सकल भवाकन की मेरे दिन दिन मैदियो ।  
 गुन्य मेरेम गुनाइ-सकनिछो दिन दिनछो दुख मैदियो ॥  
 मित्र, एक मन बसन हमारे लादि मिने सुन पाइयो ।  
 कहि कहि समाधान लीछो बिनि मोर्दि का साथी लाइयो ॥  
 कहिनहु अनि तुम सचन कु ल से हैं नई क नद मारी ।  
 कृप-वन लनि रहनि निरन्तर कबहुँ न कानि निगारी ॥  
 हरी लो समुन्नाह पकर कहि कानन मन का दीना  
 नून ल ल ल ल ली कल ली कदा सकल मन दीना ।

१०७ ✓

उधौ, तुम मज को दसा बिषायी ।  
 सो दंड पर सिद्धि आपनी, जोग बधा बिषायी ॥  
 सो करन तुम पटये माथी, सो सोची जिय माथी ।  
 'इमो' सोच दिख परमाय, जानत हो बिभी नारी ।  
 सो प'दीन खसुर बहिजन हो, सतन निबन्ध रहत हो ।  
 सो दुरत कदमद सेन बौ, पिरि पिरि बहा गहन हो ।  
 सो तुमबानि जनाहर बिम्बनि, सैन्य ज सैन्य हो ।  
 सो उल्लस जग दुर्गत परगतिद, सो गुरही पर धारी ।  
 सो जग बहानदर दुखदरि, पिरि निर्जन बटो कटि ।  
 सो दुरत को करन दस-दो, जगि दुनरी नारी ।

पकज परम पंक मे विहरन, बिधि कियौ नोर निराम ।  
 राजिव रवि को दोष न मानन, मसि सौं सहज पराम ॥  
 प्रगट प्रीति दमरुध प्रनिपाली, प्रियतम की बनबाम ।  
 मुरग्याम सौं प्रनिग्रन कोन्ही, छीकि अरन-पराम ॥

— — —

१०९

सब जग तज प्रेम के नाने ।

जाजक स्थानि सूर नदि बहिन, प्रगट पुकारत ताने ।  
 समुन्धन भीन नीर की बारी, तजन मान हठि हारन ।  
 जानि कुरंग प्रेम नदि स्थागन, अरुधि व्याध सर मागन ।  
 निमिष जकांर नैन नदि लावन, भगि भोवन गुग बीने ।  
 भवानि बनग देखि बगु मागन भये स प्रेम घट सीने ।  
 कदि आवि, कया विमर्गनिवे बाने, गग ता करि महरा तै ।  
 देन मुरग्याम बस छीके एक बर प बारी

ਸੰਗ-ਜਾਨਿ ਨੀਕੇ ਸਮੁਭੇਂਗੀ ਧੇਰੀ ਬਚਨ ਬਨਾਤ ।  
 ਪਾਸਾਗੀ ਧੇਰੀ ਹਨ ਬਾਨਿ ਤਨਹੀ ਜਾਣ ਸਿਭਾਤ ॥  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਕੀ ਅਰੁ ਜਿਯ ਅਤਿ ਸਤਿਭਾਤ ।  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਹਨ ਨੀਨਨ ਬਹੁ ਸੁਖ ਅਨਿ ਦੇਸਾਤ ॥  
 ਮੇਂ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਵਿਧਿ ਵਿਧਾ ਧਰੀਭਾਤ ।  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਕੀ ਅਰੁ ਜਿਯ ਅਤਿ ਸਤਿਭਾਤ ॥

×

×

×

੧੧੧

ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਕੀ ਅਰੁ ਜਿਯ ਅਤਿ ਸਤਿਭਾਤ ।  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਹਨ ਨੀਨਨ ਬਹੁ ਸੁਖ ਅਨਿ ਦੇਸਾਤ ॥  
 ਮੇਂ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਵਿਧਿ ਵਿਧਾ ਧਰੀਭਾਤ ।  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਕੀ ਅਰੁ ਜਿਯ ਅਤਿ ਸਤਿਭਾਤ ॥  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਹਨ ਨੀਨਨ ਬਹੁ ਸੁਖ ਅਨਿ ਦੇਸਾਤ ॥  
 ਮੇਂ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਕੀਏ ਵਿਧਿ ਵਿਧਾ ਧਰੀਭਾਤ ।  
 ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰ ਕੀ ਅਰੁ ਜਿਯ ਅਤਿ ਸਤਿਭਾਤ ॥

जैसे सुमन-वास लै आवन पवन मधुर अनुगामी :  
 कति जानन्द होत है तेसे जंग जंग सुखगामी ॥  
 ज्यों दूरवन में दूरवन देखत दृष्टि परम कवि लागी ।  
 तेसे 'सूर' सिने हरि हमको बिरह-जगधा तनु लागी ॥

११३

कभी, जोग जोग हम माही ।

अवका मार ग्यात कहा जानी, कैसे ध्यान धराही ॥  
 ते ए मूर्खन नैन कहन हैं, हरि-गुरनि जा माही ।  
 तभी क्या कण्ठ की मनुकर, इन ते सुनी म जाही ॥  
 स्वयन जीत कल जटा बंधावट, ए दुख चीन समाही ।  
 चन्दन तम्रि जोग भसम बनावन, बिरह कलक अनि दाही ॥  
 जाली भरमन जेदि कति भूने मा तो दे अनु माही ।  
 'सूर कव' मे ग्यात म वक्त दिन, ज्यों गद ते वाटाही ॥

११४

११५ - ११६

अने 'सूर' के ११५ वीं श्लोक में 'सूर' के ११६ वीं श्लोक में

भूमिनि निनि आबहि यहि गोकुल तम रैनि ज्यों चन्द ।  
 गुनर वदन रसम कोमलतनु क्यों मटिहैं नैदनन्द ॥  
 मधुर मोर प्रसन्न पिक पातक वन उपवन यदि बोलत ।  
 मन्दै गिट् बी गार्ज सुनत गो बल्लम दुखित तनु टुलत ॥  
 कामन मर जनुत विष कहि मम भूषण विविध विहार ।  
 जिन जिन पिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रतिधनुष धरे मनु गार ॥  
 द्रुम हो मगत मदा उपवारी जानित हो सब रीति ।  
 मृदुग मृदुनाथ कहे लौ ज्यों नहि प्यारे इति ॥२॥

x

x

x

११५ —

मधुर मोर इमली बरिगट् आर ।

कान्ति कान्ति माला अरे ल मम विम परम दुखारी गार ।  
 मृदुग मृदुनाथ कहे लौ ज्यों नहि प्यारे इति ॥  
 मृदुग मृदुनाथ कहे लौ ज्यों नहि प्यारे इति ॥  
 मृदुग मृदुनाथ कहे लौ ज्यों नहि प्यारे इति ॥  
 मृदुग मृदुनाथ कहे लौ ज्यों नहि प्यारे इति ॥

[illegible][illegible]

मातुः पशुमनि-सहितं ब्रजपतिः परे धरणि मुरझाह ।  
 कतिपयस्य तनु प्राणं त्यागन करै पशु गति आह ॥  
 भवनं गुरुमां यूयं दिनं प्रति रुदति पुरदिश धाह ।  
 हतां गतां दुष्टिं घनं खराईं भरति तर्हा बिललाह ॥  
 पातं त्यागं शरदं राधिका लई गृहं दुःखं लाह ।  
 दहतं पशुं न बध्नां पश्य विनु करै कोटि उपाह ॥  
 योगपरं सै रेंद्रं योगिनि हसति योग मिलाह ।  
 मातुषं विदुषं वारि मीनति अन्ततं कदा सोटाह ॥  
 कामुं जेति विधि रयाम कायै बदा नेति विधि जाह ।  
 सुरदास विराट् ब्रजजन जवन लहु सुभाह ॥

— — —

११९ ✓

कुली मन्त्र देवः शान्तिः

श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥





१२१

ऊधो तिहारें हैं अरण्य कानों  
 शरक यदि भर बरिधी बिभावरी ।  
 निगिन लीए आवैं दिवस म भोजन भाव  
 धितवन मग भई हृष्ट भावरी ॥  
 एक श्याम धिन बहू ॥ भावै  
 रगत विगत लैम बहन बावरी ॥  
 या गृन्दावन वषन श्याम विनु  
 तहाँ मगुना महे सुभग भावरी ॥  
 लाजि न होति एदै बलि जाती  
 बलि न मकन आवै विरहताप री ।  
 मूरदास प्रभु जानि मिलाबहु  
 ऊधो कीरति होइ रावरी ॥

१२२ ✓ ५५

ऊधो तिहारें पाँइ लागति हौं कहियो श्याम सो इतनी बात ।  
 इतनी दूर बसत क्यों विसरे अपनी जननी तात ॥  
 ज। दिन ते मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर । गात ।  
 ना दिन ते मेरे नैन पपीहा दररा प्यास अकुलात ॥

जहाँ खेनन को ठौर तुम्हारे नन्द देखि मुरमान ॥  
 जो कबहुँ उठि जान मरि कौ गाइ दुहावन प्रान ॥  
 दुहत देखि खोरन के सरिका प्राण निकमि नहि जान ॥  
 मुरदाम बहुरो कब देखौ कोमल कर दधि मान ॥

१२३ १०८

तब तुम मेरे काहे को आवे ।

मथुरा क्यों न रहे यदुनन्दन जौं पै काम्ह देवकी जाय ॥  
 दूध रही काहे को खोरयो काहे को बन गाइ बराय ॥  
 अघ अरिष्ट काली नाहि काह्यो बिष अल से सब मर्या जिघ्राय ॥  
 मुरदाम लोगन के भोरय काहे काम्ह अब होत पराय ॥

१२४ ✓ १०९

ऊधो हम ऐसे नहि जानी ।

सुन के हेत मर्म नहि पायो प्रगटे शारंगपानी ॥  
 निशिवासर छापी सों छाई बालक लीला पाई ॥  
 ऐमे कबहुँ भाग होहिगे बहुरो गोप भेसाई ॥  
 को अब ग्वाल मर्या मङ्ग लीन्हें साँझ समै ब्रज आवे ।  
 को अब चोरि चोरि दधि खैरे मैया कवन बोसावे ॥

विश्व-मूर्ति पदों छानों हरि वियोग क्यों सहिए ।  
 सुख-मन्त्र नैमन्दन दिनु कहो कौन विधि रहिए ॥

१२५ ✓

क्यों जो शब्द जानत न देखें ।

१. शब्द जानत न देखें ।  
 २. शब्द जानत न देखें ।  
 ३. शब्द जानत न देखें ।  
 ४. शब्द जानत न देखें ।  
 ५. शब्द जानत न देखें ।  
 ६. शब्द जानत न देखें ।  
 ७. शब्द जानत न देखें ।  
 ८. शब्द जानत न देखें ।  
 ९. शब्द जानत न देखें ।  
 १०. शब्द जानत न देखें ।

१२६ ✓

शब्द जानत न देखें ।

१. शब्द जानत न देखें ।  
 २. शब्द जानत न देखें ।  
 ३. शब्द जानत न देखें ।  
 ४. शब्द जानत न देखें ।  
 ५. शब्द जानत न देखें ।  
 ६. शब्द जानत न देखें ।  
 ७. शब्द जानत न देखें ।  
 ८. शब्द जानत न देखें ।  
 ९. शब्द जानत न देखें ।  
 १०. शब्द जानत न देखें ।

एक बेर बंदूरो ब्रज आएहु रूप कृती लु।  
मूर मुपच गोकुन जो बैठहु उग्रति मधुरो अहु॥

१२० १०१

कहियो यमुनि की आराम ।

अहाँ रही तहाँ पर आदिशो जीको बंदिशोन ॥  
मुरली रई सोदनी घृत मरि ऊषो चरि हई मीम ।  
हर घृत तो जनही मुरभिन को जो प्यारी आगीस ॥  
अभी बलत सखा धिनि आए शालदास दुख बोर ।  
अपके चही ब्रज केरी बसन्ते मूरधाम के ईम ॥

ऊषो,

इह इह मग आनि आए ।  
विन वाचय वाचय ।  
आव औ कहा चिरी ।  
गुनि विष मखा ।  
द्वैत मिथी 'मूर' के ।



एक धेर बहुरो ब्रज भावहु दूध पनूखी खाहु ।  
सूर सुपय गोकुल जाँ बैठहु उलंठि मधुपुरी जाँहु ॥

१२० १०३

कहियो यशुमति की आशीस ।

जहाँ रहो तहाँ पर लाड़िलो जीवो कोटि बरीस ॥  
सुरली दई दोहनी घृत मरि ऊषो परि लई मीस ।  
इह घृत तो वनहीं सुरभिन को जो प्यारी अगरीस ॥  
ऊँधो चलत मत्स्या मिलि आए बालबाल दस बीस ।  
अपके यहाँ ब्रज फेरि बसावो सूरदास के ईस ॥

१२८ १०४

ऊषो, ज्यैश्रियाँ अनि अनुरागी ।

एक टक मग जीवति अह रीषनि भूलेहु पलक ॥ लागी ॥  
दिन पावस पावस रिनु आई देखत हैं विदमान ।  
अब धौ कहा कियो चाहत है लईहु निरगुन ग्यान ॥  
सुनि प्रिय सखा स्वाममुन्दर के जानन मच्छल सुभाइ ।  
जैसे मिली 'सूर' के स्वामी मैसो करहु उपाइ ।





गोवर्द्धन- प्रभु जानिकै, ऊधो  
ऊधो ब्रज को नैन-प्रेम, बरने  
उमरयो नैननलार, बात कुछ  
सूर स्याम भूलत भये, रहे नैन  
पोंछि पीत पर सो कह्यो, भले

१० - १०

१३०

हमार श्याम-चलन के  
धुवन बसत आस हती सजनी अब  
मौने न ही मौन सुनि आई किहि हरन  
नगहि सबै-धलो माधव के लाते मो  
क्षिण दिगुं यानगर द्वारकसिंधु  
रदास प्रभु बिनु क्यों जावों जात है

१०

१३०

नैन नर अनाथ हार

दल गोपाल नहे न स जने सो न मन

जगद्वर हम से न च र न मे



- ४—सोमसंध्या = सोमसंध्यास का उपदेश । परमाहव = सोम सोम  
पुननि = पुनः । मुहनि = मुनि भोज । चारों = निक्षेपार का  
हैं । निगुल = माला, रत्न और लसोपुल से वे निराकार माला  
बदाह = जोड़ रहे ।
- ५—चर = शरीर । अकाश = (आकाश) स्थूल स्थान, निराधार स्थान  
तक = चाहें, भोज हो । शक्ति = कर्मज । उद्गम = निक्षेप ।
- ६—रक्तानि = रक्तानिजक, बहुत ही हल्की लक्ष्म में बाली हुई बूँद का  
क्रीड़ा पीना है । जब तक वह लक्ष्म नहीं जाना तब तक वह  
स्थायी ही 'पी' 'पी' रहता रहता है । माने = निम से । चुरत =  
मृग । अवाच = अवेक्षित । मर = (मर) काय । निमित्त = पत्रक ।  
अग्न = देखने हुए । वृत्त = शरीर । रीति = ग्राही । कोटि = द्विपे ।
- ७—चरि = भीरु, यही उद्गम का अर्थ है । भीरु = भली भीति ।  
बनाह = बनावट, रचना । चरह = एक बार । चरों = रोजगार ।
- ८—रक्तानि = रक्तानि हल्की है, शान्त हल्की है । निमित्त = पत्रक ।  
चर = काय । वर = आर । अवाच = अवेक्षित का अर्थ है ।  
अग्न = देखने हुए । वृत्त = शरीर । रीति = ग्राही । कोटि = द्विपे ।

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

